International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 9, September 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gage as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

कंप्यूटर, इन्टरनेट और अनुसन्धान

डॉ. संतोष कौल काक*

मनुष्य सदियों से निरंतर नित नूतन आविष्कारों के कारण प्रगतिपथ पर अग्रसर है . पहले सीमित साधनों की वजह से कार्य करने , या कुछ पढने अथवा जानने में उसे बहुत समय लगता था . धीरे धीरे मुद्रण कला के आविष्कार से कुछ स्थिति बदली . आज वह सब पलक झपकते संभव हो सकता है . यह चमत्कार किया है संचार – क्रांति की दुनिया में कम्प्यूटर एवं इन्टरनेट ने . संचार के क्षेत्र में क्रांति लानेवाले कंप्यूटर और इन्टरनेट वास्तव में क्या हैं ? .

"कम्प्यूटर एक इलेक्ट्रॉनिक उपकरण है , जिसमें प्रत्यक्षतः हाथों से काम किये बिना जटिल से जटिल सूचनाओं को संशोधित करके पलक झपकते ही हल सहित निकाल ओलेने की क्षमता मौजूद है . " 1.

इन्टरनेट विश्वभर के विश्वविद्यालयों , अनुसंधान संस्थानों , सरकारी एजेंसियों , व्यावसायिक प्रतिष्ठानों इत्यादि के हजारों कम्प्यूटरों को आपस में जोड़ता है . अपने घर , दफ्तर या दुकान में एक PC और एक टेलीफोन लाइन के द्वारा आप इन्टरनेट के माध्यम से दुनिया के किसी भी कोने में अपनी बात तुरंत पहुँचा सकते हैं . खिलौना बनाने से लेकर परमाणु – बम बनाने तक आप हजारों विषयों पर सूचनाएँ प्राप्त कर सकते हैं . "2. इस तरह इन्टरनेट एक ऐसा जाल है जो सम्पूर्ण विश्व के अनेकों स्रोतों से एकत्रित जानकारी को आपके सामने प्रस्तुत कर देता है . आज Facebook , Whatsup , Twitter जैसे माध्यम धड़ल्ले से प्रयोग में लाये जा रहे हैं .

इस इन्टरनेट को संचालित करने के लिए कुछ मूलभूत उपकरणों की आवश्यकता होती है . जैसे . दूरभाष , मॉडेम व कम्प्यूटर . दूरभाष यानी टेलीफ़ोन या मोबाइल से तो सभी भली भांति परिचित हैं ही . मॉडेम ऐसा उपकरण है जो कम्प्यूटर से टेलीफ़ोन के ज़रिये जानेवाले सन्देश को दूसरे फ़ोन और कम्प्यूटर तक पहुंचाता है . इस तरह इन्टरनेट विश्व के विभिन्न कम्प्यूटरों के बीच का एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा ज्ञान , विचारों , सूचनाओं , संदेशों आदि का आदान – प्रदान किया जाता है और इस तरह यह विश्व को जोड़ता भी है .

यूँ कम्प्यूटर का आविष्कार कम्प्यूटिंग यानी गणना के लिए हुआ था परन्तु आज यह केवल इस कार्य तक सीमित नहीं रह गया है . 1945 में कम्प्यूटर के आविष्कार के समय

* एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष - हिंदी विभाग, बी. एम. रुइया गर्ल्स कॉलेज, मुम्बई।

इसमें लगभग १८००० छोटे – छोटे बल्ब डाले जाते थे . इसमें न तो कार्यक्रम को संचित करने की सुविधा थी , न नए कार्यक्रम डालने की . नयी चीज़ या कार्यक्रम के लिए पूरे बल्ब बदलने पड़ते थे पर आज उसकी संरचना व कार्य - प्रणाली में बहुत बदलाव आ चुका है . कम्प्यूटर प्रौद्योगिकी में पिछले चार – पांच दशकों में उल्लेखनीय प्रगति व क्रान्ति हुई है . जो कार्य करने में पहले बहुत समय लगता था , या पूरा नहीं हो पाता था , आज के कम्प्यूटर की सहायता से ऐसे अनेक कार्य पलक झपकते हो जाते हैं , फिर चाहे वह जटिल से जटिल आंकड़े की गणना करना हो , ग्राफ बनाना हो , वर्षों पूर्व के लेख – आलेख , पत्र – पत्रिकाएँ पढना हो , पुस्तकों – लेखकों के बारे में जानना हो या कुछ और . यह सब आप इन्टरनेट पर मौजूद सर्च – इंजिन्स की सहायता से कर सकते हैं . **सर्च – इंजिन्स** गूगल , याहू , वेब – क्रॉलर आदि अनेक हैं . जिनके द्वारा आप विषय - विशेष के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं . विषय या व्यक्ति – विशेष तक पहुँचने में सहायक यह सर्च – इंजिन आपके सामने ऐसी वेबसाइटस खोल देते हैं ,जिनमें ढेर सारी सूचनाओं का संकलन होता है . आप उन वेब - पन्नों को खोलकर समाचार , साहित्य , साहित्य – समीक्षा , पत्र – पत्रिकाओं , शिक्षा , ज्योतिष , धर्म , दर्शन , व्यापार, मनोरंजन , कला , खेल , खान – पान , पर्यटन , देशी – विदेशी , सरकारी आदि विषयों की जानकारी पा सकते हैं . इतना ही नहीं वहाँ से आप अपनी रूचि व आवश्यकता के अनुसार इन विषयों पर विशेष जानकारी भी पा सकते हैं .

किसी समय में इन साधनों में हिंदी का प्रयोग असंभव सा लगता था किन्तु आज हिंदी में ही लगभग 1240 वेबसाइटस हैं . जैसे WWW.sahitykunj.net , Kavitakosh.org , hindinest.com , samkaleensahitya.com , hindisewa.com , Wikipedia.com , काव्यसुधा आदि . इन पर यूनिकोड , हिंदी यंत्र , हिंदी टूलबार पिटारा , गूगल इंडिक आदि के ज़रिये आप हिंदी का टंकण के लिए प्रयोग भी आसानी से कर सकते हैं . आज यह इन्टरनेट और कम्प्यूटर हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन चुका है .

अनुसन्धान भी हमारे जीवन का आवश्यक अंग है . ऑक्सफ़ोर्ड डिकशनरी के अनुसार . "किसी भी ज्ञान की शाखा में नवीन तथ्यों की खोज के लिए सावधानी पूर्वक किये गए अन्वेषण या जाँच – पड़ताल को अनुसंधान की संज्ञा दी जाती है. (Research is a careful investigation or inquiry esp. through search for new facts in any branch of knowledge .)" 3. इस तरह अनुसंधान के बिना विश्व के किसी भी भू – भाग या क्षेत्र में उन्नति और विकास की गुंजाइश असंभव ही है. अतः अनुसन्धान का हमारे जीवन में ही नहीं मानव – सभ्यता और विकास में भी बहुत महत्वपूर्ण स्थान है . इस कम्प्यूटर और इन्टरनेट की अनुसंधान में क्या , कितनी और कैसी उपयोगिता है - अब इसकी बात करें .

अनुसंधान की प्रविधि और प्रक्रिया के महत्वपूर्ण चरणों की बात करें तो शोध – छात्र के लिए शोध – कार्य करने का निर्णय करने के उपरांत निदेशक का चयन करने से लेकर विषय के चयन , सामग्री – संकलन , सामग्री प्राप्त करने के विभिन्न स्रोत , उनसे प्राप्त सामग्री का संग्रहण , रूपरेखा - निर्धारण , करना और फिर उस तमाम सामग्री का

अपने शोध – उद्देश्यों के अनुरूप आकलन करना , उसका विवेचन – विश्लेषण कर प्रबंध प्रस्तुतीकरण करना आदि अत्यंत महत्वपूर्ण चरण हैं . इन सब में शोधकर्ता के लिए कम्प्यूटर और इन्टरनेट आज किस तरह से सहायक होकर अपनी भूमिका निभा रहा है , इसकी बात करते हैं.

शोध करने का विचार आने पर या इस विषय में निर्णय करने के बाद बारी आती है , **निर्देशक के चुनाव की** . अमेरिका के भूतपूर्व प्रेसिडेंट जोन्सन ने एक बार कहा था , " The person who is most powerful must be most responsible . "4. शोधार्थी को निदेशक का चयन करने में , या निदेशक को शोधार्थी को चुनने में कितने और कैसे – कैसे पापड बेलने पड़ते हैं , इस बात से बहुत से लोग भली – भांति परिचित हैं . परन्तु आज इन्टरनेट की सहायता से यह संभव हो गया है कि शोधार्थी जिस विषय में रूचि रखता है , और अनुसंधान करना चाहता है , उस विषय के विशेषज्ञ की जानकारी इन्टरनेट की सहायता से प्राप्त कर ले . यह जान ले कि वह विशेषज्ञ देश – दुनिया के किस कोने में है . यह जानने के बाद वह इन्टरनेट की सहायता से ही ईमेल या फ़ोन के ज़रिये उनसे संपर्क स्थापित कर बातचीत आसानी से कर सकता है . चर्चा एवं विचार – विमर्श भी कर सकता है . अब विश्वविद्यालयों के चक्कर काटने की आवश्यकता भी नहीं है . घर बैठे निदेशकों की जानकारी , उनसे बातचीत संभव है इस माध्यम से . यदि निदेशक किसी दूरस्थान का तय हो गया तो घर बैठे इन्टरनेट के ज़रिये प्रवेश लेकर इन्टरनेट के ज़रिये ही ईमेल , स्काइप , नेट – कॉल आदि के माध्यम से अपने प्रश्नों का समाधान किया जा सकता है . अपना लिखा – पढ़ा भेजा जा सकता है. निदेशक भी प्राप्त सामग्री को जाँच कर , यथावश्यक सूचना और निर्देशों के साथ इन्टरनेट के ज़रिये ही उस सामग्री को प्रेषित कर सकते हैं . और यह मेल पल भर में पहुँच भी जाता है . पहले की तरह इसे भेजने पर समय और रुपये व्यय नहीं करने पड़ते . पहले यह सब कल्पनातीत था पर आज इन्टरनेट के कारण यह सब संभव हुआ है. इसने शोधार्थी व निदेशक के बीच की स्थान व समय की दूरियों को कम कर दिया है . हालाँकि यह नहीं भूल सकते कि गुरु – शिष्य परंपरा में जो आत्मीयता है , जो प्रगाढ़ता है उसका इसमें अभाव हो सकता है . व्यक्तिगत रूप में मिलकर इस कार्य के करने की प्रक्रिया में जिस तरह गुरु - शिष्य में परस्पर भावनात्मक प्रगाढ़ता बन जाती है, उस गरिमामाय सम्बन्ध का अभाव इस प्रणाली में निश्चित ही होगा.

हम जानते हैं कि अनुसंधान में **विषय – चयन** बहुत सोच – समझकर एवं गहरी छानबीन तथा समझ – बूझ से करना चाहिए . "अनुसंधान के लिए किसी विषय को चुनने के पूर्व सभी संभव स्रोतों से यह ज्ञात करना होगा कि यह विषय कितना नया, कितना भव्य और कितना गंभीर है . इन तीन कसौटियों में से किसी की भी उपेक्षा करने पर शोध का परिणाम भ्रामक , थोथा एवं निराशाजनक होगा . "5. परंपरागत प्रणाली में इसको लेकर कई दिक्कतें आती थीं. इतने संस्थान , विश्वविद्यालय , कहाँ कौन – सा शोधकार्य हो रहा

है , या हो चुका है , इसे जानना लगभग असंभव - सा था , स्थान और समय की सीमा भी इसका एक कारक थी . इसके कारण शोध में पुनरावृत्ति जैसी संभावनाएँ तो निश्चित तौर पर थीं ही. किन्तु आज कम्प्यूटर और इन्टरनेट की सहायता से इस समस्या का कुछ निदान हो चुका है . आज सर्च इंजिन्स की सहायता से जैसे ही आप इन्टरनेट पर किसी भी विषय , लेखक , कृति या समीक्षा आदि को खोजते हैं , तो आपको उसपर विश्वभर की सैंकड़ों पुस्तकें , लेखक व उनकी कृतियाँ , उनपर की गयी समीक्षाओं की जानकारी से भरे वेबपेजेस मिल जाते हैं , पुस्तकों के प्रकाशन और उपलब्धता की जानकारी के साथ . फिर आजकल कई विश्वविद्यालय और संस्थाएँ अपने यहाँ के एम. फिल ., पी. एच . डी . के शोध – प्रबंध ऑनलाइन रखते हैं . कुछ लोग तो इस प्रक्रिया को अनिवार्य रूप से अपना चुके हैं और कुछ इसे अपनाने की प्रक्रिया में हैं . खैर , शोधार्थी को पता चल जाता है कि अमुक विषय पर किसने , कहाँ , कितना , कैसे , किस तकनीक का इस्तेमाल करके क्या काम यानि कि अनुसंधान किया है . विश्वभर में सम्बंधित विषय पर कहाँ गोष्ठियाँ , चर्चाएँ – परिचर्चाएँ हुई हैं , कहाँ होंगी , उनके क्या परिणाम हैं यह जानकारी भी मिल जाती है . सब देखने – जाँचने के बाद शोधार्थी निदेशक से चर्चा करके अपने शोध हेतु मौलिक विषय का चयन एवं शीर्षक का निर्धारण कर सकता है .

अब बात करें रूपरेखा – निर्धारण की तो यह अब ज्ञात ही है कि आज अनेक शोध – प्रबंध ऑनलाइन उपलब्ध हैं . उन्हें देखकर शोधार्थी को अपने विषय की रूपरेखा बनाने में एक दिशा मिल सकती है और उसके सहारे से वह सीख सकते हैं कि विषय के अनुरूप कैसे रूपरेखा बनायी जा सकती है . और इस तरह सोच – विचारकर वह अपनी मौलिक रूपरेखा का निर्माण कर सकते हैं . यहाँ मैंने विषय - चयन और रूपरेखा - निर्माण में मौलिकता की बात कही है , इस मौलिकता वाली बात को अनुसंधानकर्ता को अनुसंधान के आरम्भ से लेकर अंत तक हरगिज़ नहीं भूलना चाहिए . तभी उसके द्वारा किया गया अनुसंधान कार्य सफल व वैध माना जाएगा , अन्यथा नहीं .

फिर आती है विभिन्न – स्रोतों से **सामग्री – संकलन** की बारी . सामग्री के विभिन्न स्रोत होते हैं . जैसे ग्रंथालय (पुस्तकें , पत्र – पत्रिकाएँ आदि) , संग्रहालय (ताम्रपत्र, शिलालेख , गजेटियर , आदि) , साक्षात्कार , सर्वेक्षण आदि . पुस्तकालय जाना शोध की अब तक की बहुप्रचलित और पारंपरिक प्रणाली रही है . पुस्तकालय जाना आवश्यक नहीं , लाभदायक नहीं – ऐसा मेरा मानना कदापि नहीं है . क्यूंकि यह सच है कि पुस्तकों की जगह कोई नहीं ले सकता और उनका महत्त्व अक्षुन्न है और रहेगा भी . परन्तु एक ही पुस्तकालय में , या एक ही शहर में सारी पुस्तकें या सामग्री उपलब्ध हो जाय , यह संभव नहीं होता और अब तक इसके कारण शोधार्थियों को अनेक दिक्कतों का सामना भी करना पड़ता था . पुस्तकालय जाने , सदस्य बनने की लम्बी औपचारिकताएँ पूरी करने के बाद भी पुस्तकें खोजने - प्राप्त करने , पुस्तकों की सीमित संख्या , उनकी उपलब्धता होने , उन्हें रखने की अवधि आदि में दिक्कतें तो आती ही हैं . साथ ही समय , श्रम , पैसा

आदि बहुत खर्च होते हैं .वहीँ आज इन्टरनेट पर कई ई – पुस्तकें , ई – जर्नल्स , ई – पुस्तकालय के साथ साथ पत्र – पत्रिकाएँ , विभिन्न आवश्यक आंकड़े , चार्ट , ग्राफ , चित्र , मानचित्र , रचनाकारों और पुस्तकों के विषय में जानकारियाँ , लेखकों और प्रकाशकों के पते , फ़ोन नम्बर , इमेल एड्रेस , आदि आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं , जिनकी सहायता से आसानी से सामग्री तक पहुँचा जा सकता है. जहाँ पुस्तक एक समय में एक ही व्यक्ति को उपलब्ध हो सकती है वहीँ इन्टरनेट पर मौजूद सामग्री का एक साथ हजारों शोधार्थी अपनी - अपनी आवश्यकतानुसार लाभ उठा सकते हैं . उसे अपने कम्प्यूटर पर सेव करके रख सकते हैं और जब – जब ज़रूरत पड़े , व जब भी समय मिले उसे अपनी सुविधानुसार पढ़ सकते हैं . इन्टरनेट पर कई समूह चर्चा – मंच भी होते हैं , ऐसे मंचों पर होनेवाली चर्चा – परिचर्चा भी सामग्री प्राप्त करने का महत्वपूर्ण स्रोत हो सकती है. साक्षात्कार आदि लेने के लिए भी यूँ कई दिक्कतों का सामना अनुमति लेने , स्थान , समय आदि निश्चित करने को लेकर परंपरागत प्रणाली में होता है . किन्तु कम्प्यूटर , इन्टरनेट के माध्यम से मेल , स्काइप आदि के ज़रिये विषय – विशेषज्ञों , लेखकों , समीक्षकों से घर बैठे साक्षात्कार लिया जा सकता है . उनसे अन्य आवश्यक जानकारियाँ भी ज्ञानवर्धन की दृष्टि से ली जा सकती हैं. हाँ , एक बात यहाँ भी ध्यान देने योग्य अवश्य है कि इसमें जो जानकारियाँ उपलब्ध होती हैं , वे वैध या सत्य हैं या नहीं इसे परखना आवश्यक ही नहीं शोध के लिए तो अनिवार्य ही मान लेना चाहिए . हर वेबसाइट पर ‘ Ask Me ‘ होता है , वहाँ जाकर आप स्रोत की वैधता की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं . हर वेबपेज के नीचे दिनांक और स्रोत का जिक्र होना भी अनिवार्य है , तो वहाँ से स्रोत के बारे में जानकर जाँच लेना चाहिए जानकारी की वैधता के विषय में . स्रोत में इस बात का उल्लेख होना चाहिए कि ये किनके विचार हैं , लेखक उस विषय का ज्ञाता है या नहीं, सामान्य पाठक है या विषय – विशेषज्ञ . अन्यथा आगे चलकर मौलिकता और सामग्री की वैधता के सन्दर्भ में समस्या का सामना करना पड सकता है .

परंपरागत प्रणाली में **सन्दर्भ - कार्ड एवं टिप्पणियां बनाने** की अनिवार्यता है . किन्तु इसमें उपलब्ध सामग्री के साथ - साथ अपना लिखा हुआ भी सुरक्षित यानि सेव करने की सुविधा भी होती है . इसके कारण लिखने की बचत तो इसमें होती ही है , पन्ने भी बचते हैं . पन्नों को बचाना पर्यावरण की सुरक्षा की दृष्टि से भी लाभदायक है . फिर शोधार्थी जब चाहे तब , जो चाहे वह फेरबदल अपने द्वारा संकलित सामग्री में कर सकता है. उसमे परिवर्तन और परिवर्द्धन भी कर सकता है.

अगला चरण है **विषय का विवेचन , विश्लेषण और निष्कर्ष की स्थापना** . इन्टरनेट के ज़रिये शोधार्थी अपने शोध विषय पर विभिन्न विद्वानों द्वारा लिखी गयी समीक्षा या आलोचनाओं को पढ़ सकते हैं . उनसे संपर्क संभव हो तो विचार – विमर्श भी कर सकते हैं . साक्षात्कार भी ले सकते हैं . कुछ विषयों में सर्वेक्षण भी इन्टरनेट , ईमेल आदि के माध्यम से संभव है . पर इन्टरनेट के उपयोग की सीमा इस चरण में यहीं तक होनी

चाहिए . विवेचन , विश्लेषण और निष्कर्ष की स्थापना शोध का सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटक है , समग्र शोध का आधार भी है . अतः शोधार्थी का अपना आकलन , अपना निष्कर्ष होना चाहिए – वही अनुसंधान कहला सकता है.

आधुनिक काल के शोध को लेकर सबसे बड़ी समस्या इसी रूप में देखी जाती है कि अब कई बार ऐसा दिखाई देता है कि इन्टरनेट पर सामग्री की विपुल मात्र में उपलब्धता ने अनुसंधानकर्ता की विचार करने की क्षमता को कुंद ही कर दिया है . उसे लोभ हो जाता है और वह नक़ल उतार लेता है . जिसके कारण आज श्रम से बचकर कई विद्यार्थी कॉपी - पेस्ट करने लगे हैं . और दूसरे के विचारों , उद्धरणों को अपना बताकर प्रस्तुत करने का लोभ – संवरण नहीं कर पा रहे हैं . इस तरह के लालच में आये हुए अनुसंधानकर्ताओं के कारण शोध की प्रक्रिया और मौलिकता दोनों ही बाधित होते जा रहे हैं . अनुसंधान के क्षेत्र में इन्टरनेट की उपयोगिता ने शोध में चोरी जैसी इस बड़ी समस्या को जन्म दे दिया है. इसे ' प्लेजियारिज्म ' कहते हैं . एक वेबसाइट पर लिखे लेख के अनुसार , " All of the following are considered plagiarism :

* turning in someone else's work as your own.
* copying words or ideas from someone else without giving credit
* failing to put a quotation in quotation marks.
* giving incorrect information about the source of a quotation.
* changing words by copying the sentence structure of a source without giving credit. Most cases of plagiarism can be voided, however by citing sources." 6.

इस तरह किसी अन्य लेखक की अवधारणाओं , विचारों , अभिव्यक्तियों और भाषा को अपना मौलिक लेखन – कार्य बताना और अपने नाम से छपवाना ' प्लेजियरिज्म ' कहलाता है . कुछ लोग इसे नक़ल की श्रेणी में गिनते हैं . पर शोध के क्षेत्र में इस तरह की क्रिया को नक़ल से कहीं गंभीर मामला माना जाना चाहिए . यह शैक्षणिक बेईमानी है. शोधार्थी द्वारा दूसरे का स्रोत दिए बिना या आभार प्रकट किये बिना , कभी - कभी कुछ शब्द या वाक्य बदलकर उसे अपना शोध बताने का अपराध आजकल प्राकश में आ रहा है. प्रो . देवेश किशोर ने अपनी पुस्तक ' हैंडबुक ऑफ़ कम्युनिकेशन रिसर्च ' में इसे मुख्यतः दो वर्गों में बाँटा है. –

1. जानबूझकर (Intentional) : जब स्रोतों का उल्लेख जानबूझकर न किया जाय , थोडा फेरबदल कर , या अपने ही पूर्व में किये कार्य का सारग्रहण कर उसे प्रस्तुत किया जाय , आदि .
2. अनजाने में (Unintentional) : जब स्रोतों का उल्लेख तो हो पर अनजाने में उद्धरण चिह्न छूट गया हो , या स्रोत का पूरा उल्लेख न हो , केवल लेखक का नाम हो, कभी उद्धरण चिह्न लगाना भूल गए हों – आदि . ' 7.

यह सब अनुसंधान नहीं अपितु औरों के शोध अथवा कथनों का लिखित ब्यौरा माना जाएगा . और मूल लेखन न होने से ' प्लेजियरिज्म ' की कोटि में आएगा . अतः शोध – प्रक्रिया के सभी स्तरों पर शोध सम्बन्धी नीतिगत सिद्धांतों का ध्यान रखना आवश्यक है .

चोरी की ऐसी मानसिकता का अनुसंधान में प्रवेश घातक है . समस्या आती है तो समाधान भी खोज लिए जाते हैं . आज ऐसे कई सॉफ्टवेयर बन चुके हैं जो इस चोरी को पहचान लेते हैं . कई विश्वविद्यालय इन सोफ्टवेयर्स को अपना चुके हैं और कई विश्वविद्यालय इसे अपनाने की प्रक्रिया में हैं . सरकारी स्तर पर भी इसके विषय में कार्य हो रहा है . 'प्लेजियरिज्म ' पकडे जाने पर डिग्रियाँ रद्द हो रहीं हैं , नौकरियों से बर्खास्तगी की सम्भावना भी बन रही है . ऐसे में शोधार्थी सावधान रहें और उस कहावत को याद कर लें कि ' लालच बुरी बला है ' . ध्यान में रहे कि इसके ' फेर में पड़कर ' कहीं ' लेने के देने न पड जाएँ ' .

बात करें **प्रबंध के प्रस्तुतीकरण** की तो ,शीर्षक पृष्ठ कैसा हो , कितने कुल पृष्ठ हों, प्रबंध में कहाँ , किस क्रम में क्या रखा जाय आदि के विषय में बहुतेक जानकारी इन्टरनेट से उपलब्ध हो जाती है . उदाहरण के तौर पर शीर्षक पृष्ठ कैसा हो – इसे इन्टरनेट पर ढूँढा जा सकता है . खोजने पर अलग – अलग यूनिवर्सिटी का फोर्मेट इन्टरनेट से उपलब्ध हो जाता है , परन्तु शोधार्थी को अपने विश्वविद्यालय के ढांचे (format) को ही अपनाना चाहिए . फिर बात आती है टंकण , प्रूफ रीडिंग आदि की तो यह कहना अनुचित न होगा कि कंप्यूटर और इन्टरनेट का यह दूसरा सबसे बड़ा लाभ हुआ है - शोध की दृष्टि से . पहले टंकण को लेकर बहुत दिक्कतें थीं . विशेषकर भारतीय भाषाओँ में टंकण को लेकर तो बहुत सारी तकलीफों का सामना करना पड़ता था . उसमें समय और पैसा बहुत खर्च होता था . यदि कोई त्रुटि किसी पृष्ठ पर , किसी पंक्ति में रह जाती थी तो पूरा – पूरा पृष्ठ फिर से टंकण के लिए देना पड़ता था . परन्तु अब ऐसा नहीं है. यूनिकोड के कारण अब विभिन्न भाषाओँ में टंकण आसान भी हो गया है .

आज इतने सॉफ्टवेयर , टूल्स आदि इन्टरनेट पर मिल जाते हैं कि शोधार्थी अपना शोध – प्रबंध स्वयं टंकण करके अपना शोध – कार्य समय मिलने पर संभालकर (save करके) रख सकता है . जब भी उसमे जोड़ना – घटाना हो कुछ , वह अपनी सुविधा से कर सकता है . और कम्प्यूटर क्यूँ आज तो मोबाइल जिसका प्रयोग बच्चा – बच्चा करता है वही मिनी कम्प्यूटर बन चुका है. शोधार्थी उसी पर अपना प्रबंध स्वयं टंकित कर रख सकते हैं, प्रूफ – पठन के दौरान जहाँ गलती मिले , केवल उसी मात्रा या स्थान को आसानी से बदलने की सुविधा भी उपलब्ध है . फिर उसकी सेटिंग कर सकते हैं, उसमे आवश्यकतानुसार ग्राफ, मेप आदि जोड़कर अंत में बाहर से आवश्यकता पड़े तो बाहर फॉरमेटिंग करवाकर , प्रिंट लेकर उसका जिल्दीकरण आसानी से कम खर्च में करवा सकते हैं . इतना ही नहीं सन्दर्भ ग्रन्थ – सूची को अकारादि क्रम में बनाने में भी कम्प्यूटर के प्रोग्राम शोधार्थी के लिए सहायक बन जाते हैं. साथ ही एक साथ जितनी चाहें प्रतिलिपियाँ बनवायीं जा सकती हैं .

एक महत्वपूर्ण बात और , हम जब इन्टरनेट का इस्तेमाल करते हैं , तो कई वेबसाइट्स खोलते – देखते – पढ़ते रहते हैं , उनमे से किसी में भी वायरस हो सकता है . जो हमारे

कम्प्यूटर पर प्रहार कर उसे संक्रमित कर हमारे द्वारा संकलित , संचित , टंकित समग्र सामग्री को नष्ट कर सकता है . तो हर शोधार्थी यह ध्यान रखे कि वह जिस कम्प्यूटर का इस्तेमाल अपने शोध – कार्य के दौरान कर रहा है उसे सुरक्षित करने , रखने के लिए ' एंटीवायरस सॉफ्टवेयर ' का प्रयोग करना न भूले. यह सॉफ्टवयेर बाज़ार में भी उपलब्ध होते हैं और net से भी मुफ्त या खरीदकर पाए जा सकते हैं .

हम बनिए की दूकान में जाएँ , या सब्ज़ीवाले के पास या फिर कपडे खरीदने या फिर कुछ और लेने , हम हर चीज़ को बहुत देखते – परखते हैं , तब उसमें से जो श्रेष्ठ होता है उसका चयन करते हैं . इन्टरनेट पर भी अनुसंधान हेतु बहुत सी जानकारी – सामान उपलब्ध हैं , उसमे से सही ज्ञान ही आपका सहायक हो , आपका सशक्तिकरण कर सकता है – इसे हमें नहीं भूलना चाहिए . यदि हम कुछ ऐसा भोजन करते हैं जो हमारे स्वास्थ्य के लिए अहितकारी हो , या वह नहीं खाते जो हमारे लिए हितकारी होता है तो दोनों ही स्थितियों में हम जीवन में सही स्वास्थ्य पाने के आनंद से वंचित रह सकते हैं . उसी तरह इन्टरनेट पर हमें अनुसंधान में सहायक बहुत उम्दा जानकारियाँ भी मिल सकती हैं और भ्रामक व असत्य तथ्य भी . ऐसे में न तो उस पर अंधा विशवास करने से काम चलेगा और न ही उस ज्ञान को सिरे से खारिज करने से . तथ्यों को एकत्रित करना ही काफी नहीं अपितु उनका उचित ढ़ंग से संग्रहण करना एवं तथ्यों की सत्यता की जाँच करना भी आना चाहिए . शोध कार्य में हमें अपने काम के अनुरूप सॉफ्टवेयर की जानकारी भी होनी चाहिए . हमें यह कदापि नहीं भूलना है कि कम्प्यूटर और उसके ज़रिये इस्तेमाल में आनेवाला इन्टरनेट एक मशीनी उपकरण है जो मस्तिष्क की तरह सोच नहीं सकता . वो हमें संचालित करे इसकी अपेक्षा बेहतर यह होगा कि हम उसे संचालित करें .

मेरा मानना है कि मानव – मस्तिष्क ही श्रेष्ठ था , है और रहेगा . कोई मशीनी उपकरण हमें चुनौती नहीं दे सकता इस मामले में . न ही वह हमारे मस्तिष्क के हिसाब से सोच सकता है . तो कम्प्यूटर रुपी ज्ञानसागर में जो मोती हमें उपलब्ध होते हैं , उनमें से अपने लक्ष्य के अनुरूप कौन - से और कितने मोती चुनने हैं , इसका ध्यान रखना और इसके बारे में फैसला हमें ही करना होगा .

अंत में , वो पंचतंत्र की कथा याद दिला दूँ – जहाँ तीन मूढ़ विद्यार्थी गुरु से ज्ञान - सागर पाकर जब जंगल के रास्ते से घर लौटते हैं , रास्ते में कंकाल देखते हैं . तो स्वयं को दूसरे से श्रेष्ठ साबित करने के अहम् में और गुरु के दिए ज्ञान के प्रति वहम से भरकर , उसकी सच्चाई को परखने के लिए वे रास्ते में बिखरी पड़ी हुई अनेक अस्थियों पर प्रयोग करते हैं. बिना यह सोचे -समझे कि यह किसकी अस्थियाँ बिखरीं हैं , एक यह सोचे बिना की यह अस्थियाँ किस प्राणी की हैं , उन्हें एकत्रित कर कंकाल के रूप में जोड़ता है, दूसरा यह सोचे बिना कि यह कंकाल किस प्राणी का है - उसमें माँस चढ़ाता है और तीसरा भी यह सोचे बिना कि यह कौन सा प्राणी है जिसमे मैं प्राण फूंकने जा रहा हूँ - उसमें प्राण फूँक देता है . निष्प्राण शरीर में प्राण पड़ते ही वह शेर उन तीनों को खा जाता है. तो इस

कहानी से सबक लेते हुए ऐसी स्थिति और गलत निर्णयों से अवश्य बचें और कम्प्यूटर और इन्टरनेट का अनुसंधान में उचित प्रयोग कर अनुसंधान को एक नयी और सार्थक दिशा में ले जाएँ .

सन्दर्भ सूची

1. कॉमडेक्स कम्प्यूटर कोर्स किट , विकास गुप्ता , पृष्ठ सं. 18 .
2. कॉमडेक्स कम्प्यूटर कोर्स किट , विकास गुप्ता , पृष्ठ सं. 576 .
3. The advanced Learner's Dictionary of current English, oxford, 1952, पृष्ठ सं. 1069 .
4. साहित्यिक अनुसंधान के आयाम , डॉ. रवींद्र कुमार जैन , पृष्ठ सं. 92 .
5. वही, पृष्ठ सं. 56 .
6. https ://www.plagiarism.org/article / what – is – plagiarism .
7. A handbook of communication Research, Devesh Kishor.